International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 6; June 2017; Page No. 102-102

वैयाकरण सिद्वान्तकौमुदीगत तिङन्तस्वरप्रकरणस्थ दो पाणिनीय सूत्र (8.1 28–8.1 29)ः एक अध्ययन

नवीन
शोधछात्रा, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र, गांव खानपुरा कलां, जिला झज्जर, हरियाणा, भारत

प्रस्तावना

भहोजिदीक्षित प्रणीत वैयाकरण सिद्वान्त कौमुदी के 'स्वर प्रक्रिया' के अर्न्तगत तिङन्तस्वर प्रकरण है। इस प्रकरण में स्वरसम्बन्धी 45 सूत्रों की सोदाहरण व्याख्या की गई है। इस प्रकरण में तिङन्त पद के स्वर तथा तिङन्त पद के परवर्ती पद के स्वर का विधान करने वाले सूत्र पठित है। तिङन्त पद का स्वर भी पूर्ववर्ती अथवा परवर्ती पद से प्रभावित होता है– ऐसा कतिपय सूत्रों से स्पष्ट है। इस प्रकरण के कुछ सूत्र यहाँ उदाहरण के रूप में प्रस्तुत है। तद्यथा–पाणिनीय व्याकरण के अनुसार तिङ् प्रत्ययों में जो पित् प्रत्यय है। वे अनुदात्त होते है, शेष अपित् प्रत्यय सामान्यतः आद्युदात्त होते है यथा तिप्, सिप्, मिप् ये तीन प्रत्यय पित् होने के कारण अनुदात्त होते है [1]परन्तु शेष तस्, झि आदि अपित् प्रत्यय आद्युदात्त[2] हैं। परन्तु 'तास्' प्रत्यय से परे आने वाले सार्वधातुकसंज्ञक तिङ् प्रत्यय अनुदात्त हो जाते है। इसी प्रकार ङित धातु तथा अकारान्त के रूप में पठित धातु से परे आने वाले सार्वधातुकसंज्ञक प्रत्यय अनुदात्त हो जाते हैं[3]। वेदमन्त्र के संहितापाठ में अतिङन्त पद से परे आने वाले तिङन्त पद सर्वानुदात्त हो जाता है।[4] यथा–'अ॒ग्निमीळे' इस प्रयोग में अतिङन्त पद 'अ॒ग्निम्' के पश्चात आने वाला तिङन्त पद 'ईके' सर्वानुदात्त है। उदात्त 'अग्नि' के पश्चात अनुदात्त 'ई' को स्वरित हो गया[5] है। तथा तत्पश्चात् अनुदात्त 'ळे' का एकश्रुति[6] अथवा प्रचय स्वर हो जाता है। तिङन्त पद अनुदात्त नही होता है[7] यथा– 'यदग्ने॒ स्याम॒हं त्वम्' 'यत्' (यद्) निपात् का तिङन्त पद से पूर्व पाठ होने से तङन्त पर 'स्याम्' सर्वानुदात्त नहीं है। इस पर में 'यासुट्' (यास झ या) आगम का स्वर उदात्त है।[8]

मेरे शोध–पत्र में तिङन्त स्वर प्रकरण के दो सूत्रों (तिङ्ङतिङः, न लुट्) का समीक्षात्मक अध्ययन किया जाएगा।

तिङ्ङतिङः

इस सूत्र में 'अनुदात्तं सर्वमपादादौ'[10] सूत्र में पठित सभी तीनों पदों की अनुवृत्ति आ रही है। अतः प्रकृत सूत्र के अनुसार वैदिक मन्त्र के पाद अथवा चरण के आदि में न आने वाले अतिङन्त अर्थात् तिङन्त से भिन्न पद के पश्चात् आने वाला तिङन्त पर सर्वानुदात्त हो जाता है[11] यथा–'अ॒ग्निमीळे'[12] इस मन्त्रांश में पाद के आदि में 'अ॒ग्निम्' पद अतिङन्त अर्थात् तिङन्त से भिन्न सुबन्त पद है। तत्पश्चात् तिङन्तपद 'ईळे' (ईड्, लट्, उ० पु०, एकवचन) है। इस पद में प्रयुक्त 'ईड' (ईड्) धातु अनुदात्तेत् है अर्थात् इस धातु के डकारोत्तर 'अ॒' का स्वर अनुदात्त है जिसकी इत्संज्ञा हो जाती है। धातु का आदि अक्षर 'ई' उदात्त तथा लकार के स्थान पर आदेशभूत सार्वधतुकसंज्ञक 'इट' (इ झ ए) प्रत्यय का स्वर अनुदात्त है। इस प्रकार 'इळे॒' पद आ॒द्युदात्त तथा अन्तानुदात्त है। 'ई॒ळे॒' पद सर्वानुदात्त (ईळे॒ झ ई॒ ळे॒) हो गया है। उक्त मन्त्रांश में 'अ॒ग्निम्' पद 'नि'[16] प्रत्यय के आद्युदात्त[17] होने से अन्तोदात्त है। उसके पश्चात 'ई॒ ळे॒' पद सर्वानुदात्त है। उदात्त 'ग्नि' के पश्चात आने वाले 'ई॒ ळे॒ पद का अनुदात्त 'ई' का स्वर स्वरित[18] (ई॒ झ ई) हो गया। इन दोनों पदों में 'म्' व्यंजन[19] का व्यवधान होने से 'मी' अक्षर के पश्चात् अनुदात्त 'ळे॒' अक्षर का स्वर एकश्रुति[20] (ळे॒ झ ळे) हो गया।

न लुट्

इस सूत्र से लेकर 'यदवृत्तान्नित्यम्' सूत्र तक निघात अर्थात् सर्वानुदात्तत्व का निषेध करने वाले सूत्र है। इस सूत्र में पूर्ववर्ती सूत्र 'तिङ्ङतिङः' से 'तिङ्' तथा 'अतिङः' पदों की तथा अनुदात्तं सर्वमपादादौ' सूत्र में पठित सभी तीनों पदों की अनुवृत्ति आती है। इस सूत्र के अनुसार अतिङन्त पद से परे लट् लकार का तिङन्त पद् सर्वानुदात्त नहीं होता है[23] यथा 'श्वः क॒र्ता' स्थल में 'कर्ता' पद लुट् लकार, प्रथम पुरूष, एकवचन का है। इसकी निष्पत्ति 'कृ' धातु से लुट् (ल्) को परस्मैपदसंज्ञक 'तिप्' अथवा आत्मनेपदसंज्ञक 'त'[24] आदेश 'तास्' विकरण (प्रत्यय), 'तिप्' अथवा 'त्' प्रत्यय को 'डा'[25] (आ) आदेश टि–लोप, धातु के ऋ को गुण[26] एवं रपर करने पर होती है। 'कृ' धातु में उदात्त[27] स्वर है। 'तास्' प्रत्यय आद्युदात्त[28] है। अर्थात इसके आदि अक्षर 'ता' का स्वर उदात्त है। 'तास्' से परे लकार का आदेशभूत सार्वधातुकसंज्ञक प्रत्यय 'तिप्' अथवा 'त' अनुदात्त[29] है। प्र० पु०, ए०व० में 'तिप्'/त' के आदेश 'डा' के डित होने से 'तास्' के टिसंज्ञक आस् का लोप होने से 'ता' के उदात्त स्वर की निवृत्ति हो जाती है। जिसके परिणाम स्वरूप 'डा' का अनुदात्त आकार उदात्त हो जाता है। यहाँ उल्लेखनीय है कि जिन प्रयोगों में 'तास्' प्रत्यय के 'टि' (आस्) का लोप नही होता, वहाँ 'ता' अक्षर उदात्त तथा परवर्ती तिङ प्रत्यय अनुदात्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अष्टाध्यायी, 3.1.4 : अनुदात्तौ सुप्पितौ।
2. तदेव, 3.1.3 : आद्युदात्तश्च।
3. तदेव, 6.1.186 : तास्यानुदात्तेन्ङिददुपदेशाल्लसार्वधतु–कमनुदात्तमहन्विङोः।
4. तदेव, 8.1.28 : तिङ्ङतिङः ।
5. ऋग्वेद, 1.1.1 : उदात्तादनुदात्तस्य स्वरितः
6. अष्टा०, 8.4.66 : स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम्।
7. अष्टा०, 8.1.30 : निपातैर्यद्यदिहन्तकुविन्नेच्चेच्चण्कच्चिद्यत्रयुक्तम्
8. अष्टा०, 3.4.103 : यासुट् परस्मैपदेषूदात्तो ङिच्च।
9. तदेव, 8.1.28 :
10. तदेव, 8.1.18
11. सि०कौ०, सू० सं० 3935 : अतिङन्तात्पदात्परं तिङन्तं निहन्यते।
12. ऋग्वेदे, 1.1.1
13. धा०पा०, अदादिगण, धा० सं० 1091: ईड स्तुतौ।
14. अष्टा०, 1.3.2 : उपदेशेऽनुनासिक इत्।
15. तडेव, 6.1.162 : धातोः
16. उ०को०, 4.51 :
17. अष्टा०, 31.3 : आद्युदात्तश्च।
18. तदे॒व, 8.4.66 : उदात्तानुदात्तस्य स्वरित।
19. उव्वट भाष्य (ऋ०प्रा०, 3.18) : तिरोऽन्तर्धानं व्यंजनं यस्येति तैरोव्यंजनः।
20. अष्टा०, 1.2.39 : स्वरितात्संहितायामनुदात्तानाम्
21. तदे॒व, 8.1.29
22. तदेव, 8.1.66
23. सि०कौ०,सू०सं० 3936 : लुङन्तं न निहन्यते।
24. अष्टा०, 3.4.78 : तिप्तस्झि– – – ।
25. तदे॒व, 2.4.85 : लुटः प्रथम डारौरसः।
26. तदे॒व, 7.3.84 : सार्वधातुकार्धधातुकयोः
27. तदे॒व, 6.1.162 : धातोः।
28. तदे॒व, 3.1.3 : आद्युदात्तश्च।
29. तदे॒व, 6.1.186 : तास्यनुदात्तेन्डिददुपदेशाल्लसार्वधातुमनु–दात्तमह्न्विङोः।